

PC1v2 Project Test file

This is a test file used in the project to check for different file types as well the data display.

Historical background

The company rule (1773-1858)

Regulation act 1773

- Governor of Bengal → governor general of Bengal (Hasting)
- Created executive council
- Bombay and Madras were subordinate to Bengal presidency.
- Establishment of supreme court (1774)
- Prohibited civil servants from private trade and bribe accept.
- Strengthen the control over the company

Pitts India act 1784 (Act of settlement)

- Distinguished between political and commercial affair of the company
- Court of director to control commercial affair
- Board of director to control political affair.

Charter act 1833 (centralization)

- Governor General of Bengal became the governor general of India (William Bentick)
- Laws made under previous act were regulation but by this were act.
- First attempt to introduce open competition

Charter act 1853

- Indian legislative council and executive council came into existence
- Open competition exam – first in 1885 at Allahabad
- Covenanted civil services was also thrown open to Indians
- Local representation in the Indian legislative council

Government of India (1858)

(Act for good governance of India)

- Governor General of India now became the vice-roy of India (Canning)
- Abolished board of control and court of directors
- New office – secretary of state for India
- 15 member council of India to assist secretary

Indian council act 1861

- Nomination of Indian in legislative council
- Restoring the legislative power of Bombay and Madras presidency (decentralization)
- Establishment of legislative council for Bengal, NWFP, Punjab (1862, 66, 97)
- Portfolio system (Canning)
- Ordinance power to vice roy

Indian council act 1892

- Increase the non-official member in council
- Power of discussion budget in legislative council
- Election but indirect.

Indian council act 1909

(Morley-Minto reform)

- Increase the size of the legislative council (from 16-30, center)
- Official majority in central legislative council but can be non-official majority in province
- Members were allowed to ask supplementary questions on budget and can move resolutions
- First entry in executive council – Satendra Prasad Sihna
- Communal representation (Father- Lord Minto)

Government of India act 1919

(Montague Chelms Ford reform)

- Relaxed central control over province, seperated the subject
- Introduced dyarchy in the province by cameralism and direct election but franchise to limited people
- 15 member of executive council should be Indian
- Extended the communal representation
- Establishment of public service commission – 1926 (Lee Commissioin)
- Separate budget for central and provinces

Government of India act 1935

- i. Introduce 3 list
- ii. Abolished dyarchy in province
- iii. Adoption of dyarchy in central
- iv. Bicameralism in 6 provinces – Bengal, Bombay, Madras, Bihar, Assam and United Province
- v. Separate electorate to depressed class
- vi. Abolished the council of India
- vii. Franchise right to 10% population
- viii. RBI
- ix. FPSC, PPSC, JPSC and Federal courts

भ्रमर कोई कुमुदनी पर मचल बैठा तो हंगामा

- कुमार विश्वास

भ्रमर कोई कुमुदनी पर मचल बैठा तो हंगामा
हमारे दिल में कोई ख्वाब पल बैठा तो हंगामा
अभी तक डूबकर सुनते थे सब किस्सा मुहब्बत का
मैं किस्से को हकीकत में बदल बैठा तो हंगामा

कभी कोई जो खुलकर हंस लिया दो पल तो हंगामा
कोई ख्वाबों में आकर बस लिया दो पल तो हंगामा
मैं उससे दूर था तो शोर था साजिश है , साजिश है
उसे बाहों में खुलकर कस लिया दो पल तो हंगामा

जब आता है जीवन में खयालातों का हंगामा
ये जज्बातों, मुलाकातों हंसी रातों का हंगामा
जवानी के क़यामत दौर में यह सोचते हैं सब
ये हंगामे की रातें हैं या है रातों का हंगामा

कलम को खून में खुद के डुबोता हूँ तो हंगामा
गिरेबां अपना आंसू में भिगोता हूँ तो हंगामा
नहीं मुझ पर भी जो खुद की खबर वो है जमाने पर
मैं हंसता हूँ तो हंगामा, मैं रोता हूँ तो हंगामा

इबारत से गुनाहों तक की मंजिल में है हंगामा
ज़रापी के आये बस तो महफ़िल में है हंगामा सी-
कभी बचपन, जवानी और बुढ़ापे में है हंगामा
जेहन में है कभी तो फिर कभी दिल में है हंगामा

हुए पैदा तो धरती पर हुआ आबाद हंगामा
जवानी को हमारी कर गया बर्बाद हंगामा
हमारे भाल पर तकदीर ने ये लिख दिया जैसे
हमारे सामने है और हमारे बाद हंगामा

जिसकी धुन पर दुनिया नाचे

-कुमार विश्वास

जिसकी धुन पर दुनिया नाचे, दिल ऐसा इकतारा है,
जो हमको भी प्यारा है और, जो तुमको भी प्यारा है.
झूम रही है सारी दुनिया, जबकि हमारे गीतों पर,
तब कहती हो प्यार हुआ है, क्या अहसान तुम्हारा है.

जो धरती से अम्बर जोड़े , उसका नाम मोहब्बत है ,
जो शीशे से पत्थर तोड़े , उसका नाम मोहब्बत है ,
कतरा कतरा सागर तक तो ,जाती है हर उम्र मगर ,
बहता दरिया वापस मोड़े , उसका नाम मोहब्बत है .

पनाहों में जो आया हो, तो उस पर वार क्या करना ?
जो दिल हारा हुआ हो, उस पे फिर अधिकार क्या करना ?
मुहब्बत का मज़ा तो डूबने की कशमकश में हैं,
जो हो मालूम गहराई, तो दरिया पार क्या करना ?

बस्ती बस्ती घोर उदासी पर्वत पर्वत खालीपन,
मन हीरा बेमोल बिक गया घिस घिस रीता तनचंदन,
इस धरती से उस अम्बर तक दो ही चीज़ गज़ब की है,
एक तो तेरा भोलापन है एक मेरा दीवानापन.

तुम्हारे पास हूँ लेकिन जो दूरी है समझता हूँ,
तुम्हारे बिन मेरी हस्ती अधूरी है समझता हूँ,
तुम्हे मैं भूल जाऊँगा ये मुमकिन है नहीं लेकिन,
तुम्ही को भूलना सबसे ज़रूरी है समझता हूँ

बहुत बिखरा बहुत टूटा थपेड़े सह नहीं पाया,
हवाओं के इशारों पर मगर मैं बह नहीं पाया,
अधूरा अनसुना ही रह गया यूँ प्यार का किस्सा,
कभी तुम सुन नहीं पायी, कभी मैं कह नहीं पाया

अमावस की काली रातों में

-कुमार विश्वास

मावस की काली रातों में दिल का दरवाजा खुलता है,
जब दर्द की काली रातों में गम आंसू के संग घुलता है,
जब पिछवाड़े के कमरे में हम निपट अकेले होते हैं,
जब घड़ियाँ टिक-टिक चलती हैं, सब सोते हैं, हम रोते हैं,
जब बार-बार दोहराने से सारी यादें चुक जाती हैं,
जब ऊँच-नीच समझाने में माथे की नस दुःख जाती है,
तब एक पगली लड़की के बिन जीना गद्दारी लगता है,
और उस पगली लड़की के बिन मरना भी भारी लगता है।

जब पोथे खाली होते हैं, जब हर्फ़ सवाली होते हैं,
जब गज़लें रास नहीं आती, अफ़साने गाली होते हैं,
जब बासी फीकी धूप समेटे दिन जल्दी ढल जाता है,
जब सूरज का लश्कर छत से गलियों में देर से जाता है,
जब जल्दी घर जाने की इच्छा मन ही मन घुट जाती है,
जब कालेज से घर लाने वाली पहली बस छुट जाती है,
जब बेमन से खाना खाने पर माँ गुस्सा हो जाती है,

जब लाख मन करने पर भी पारो पढ़ने आ जाती है,
जब अपना हर मनचाहा काम कोई लाचारी लगता है,
तब एक पगली लड़की के बिन जीना गद्दारी लगता है,
और उस पगली लड़की के बिन मरना भी भारी लगता है।

जब कमरे में सन्नाटे की आवाज़ सुनाई देती है,
जब दर्पण में आंखों के नीचे झाई दिखाई देती है,
जब बड़की भाभी कहती हैं, कुछ सेहत का भी ध्यान करो,
क्या लिखते हो दिन भर, कुछ सपनों का भी सम्मान करो,
जब बाबा वाली बैठक में कुछ रिश्ते वाले आते हैं,
जब बाबा हमें बुलाते हैं, हम जाते में घबराते हैं,
जब साड़ी पहने एक लड़की का फोटो लाया जाता है,
जब भाभी हमें मनाती हैं, फोटो दिखलाया जाता है,
जब सारे घर का समझाना हमको फनकारी लगता है,
तब एक पगली लड़की के बिन जीना गद्दारी लगता है,
और उस पगली लड़की के बिन मरना भी भारी लगता है।

दीदी कहती हैं उस पगली लडकी की कुछ औकात नहीं,
उसके दिल में भैया तेरे जैसे प्यारे जज़्बात नहीं,
वो पगली लड़की मेरी खातिर नौ दिन भूखी रहती है,
चुप चुप सारे व्रत करती है, मगर मुझसे कुछ ना कहती है,
जो पगली लडकी कहती है, मैं प्यार तुम्ही से करती हूँ,
लेकिन मैं हूँ मजबूर बहुत, अम्मा-बाबा से डरती हूँ,
उस पगली लड़की पर अपना कुछ भी अधिकार नहीं बाबा,
सब कथा-कहानी-किस्से हैं, कुछ भी तो सार नहीं बाबा,
बस उस पगली लडकी के संग जीना फुलवारी लगता है,
और उस पगली लड़की के बिन मरना भी भारी लगता है ॥

